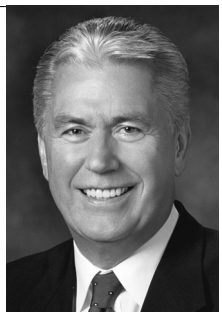

अध्यक्षता डिएटर एफ. उक्र्टाफ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार

हमारा पिता, हमारा प्रतिपालक

क्या आप ने कभी भी औज़रो से भरा डिब्बा खोला है, जोड़ने के निर्देशनों को निकालकर, और सोचा है, ''इसका कोई भी मतलब नहीं है''?

कभी कभी, हमारी अच्छी मंशा और आंदरुनी भरोसे के बावजूद, हम एक अंश को बाहर निकलते है और पूछते हैं, ''यह किस के लिए था ?'' या ''यह कैसे उचित होगा ?''

हमारी निराशा बढ़ती जाती है जैसे हम डिब्बे की ओर देखते और ध्यान देते है एक अस्वीकृत जो कहता है, 8 वार्षिये और बड़े–को जोड़ने जरुरी है ।'' क्योंकि हमारे पास अभी भी सुराग नहीं है, यह हमारे भरोसे को या हमारे स्वाभिमान को बढ़ावा नहीं देगा ।

कभी कभी हमारा अनुभव सुसमाचार के साथ सामान्य होता है । जैसे हम उसके कुछ अंश को देखते है, हम अपना सिर खुजाते और आश्चर्य करते है कि यह अशं किस के लिये है । या जैसे हम अन्य भाग को जाँचते हैं,हम जानने लगते है यहां तक पूरी तरह से समझने की कोशिश करने के बाद,हम समझ नहीं पाते हैं कि वह भाग क्युं कर जोड़ा गया था ।

हमारे स्वर्गीय पिता हमारे प्रतिपालक है

सौभाग्यता से, हमारे स्वर्गीय पिता ने हमें अद्भभूत निर्देशन हमारे जीवनों को बनाने के लिये और हमारे स्वयं की अच्छाई को एक साथ जोड़कर रखने को दिये हैं । वो आर्देश हमारी उम्र या परिस्थितीयों के बावजूद काम करते हैं । उसने हमें सुसमाचार और यीशु मसीह का गिरजा दिया है । उसने हमें मुक्ति की योजना, उद्धार की योजना, यहां तक आनन्द की योजना दी है । उसने हमें कभी भी सारी अनिश्चयता या जीवन की चुनौतियों के बावजूद अकेला नहीं छोड़ा है, कहकर, ''यहां तुम जाओ । शुभकामना । उसे सुधारो ।''

यदि हम सिर्फ धैर्य रखें और विनम्र हृदय और खुले मन से देखेंगे,हम पाएंगे कि परमेश्वर ने हमें हमारे जीवन के आनन्द के लिये उस के आर्देशो को अच्छे से समझने के लिये बहुत से विकल्प दिए है :

• उसने हमें अमुल्य पवित्र आत्मा का उपहार दिया है, जो सौभाग्य से हमारा निजी है,स्वर्गीय शिक्षका जैसे हम परमेश्वर के वचनों का अध्ययन करते और अपने विचारों और काम को उसके वचनों के अनुकुलता को एकसाथ लाते हैं ।

• उसने हमें 24 धण्टें का समय विश्वास की प्रार्थना के साथ और सच्चे मंशा के साथ बात करने का दिये हैं ।

• उसने हमें आधुनिक प्ररित और भविष्यवक्ता दिये है,जो हमें हमारे दिनों में परमेश्वर के वचनों को बताते हैं और उनके पास बंधाने या पृथ्वी पर और स्वर्ग में मुहरबंद करने का अधिकार होता है ।

• उसने अपने गिरजे की पुनस्थापन की – विश्वासियों की एक संस्था जो एक दूसरे की सहायता एकसाथ काम करके करती हैं जैसे वे अपनी मुक्ति के लिये भय,कंपने,और अस्थिर आनन्द के साथ कार्य करते हैं ।[1]

• उसने हमें पवित्र धर्मशास्त्र दिए है–उसके लिखित वचन हमारे लिये ।

• उसने आधुनिक तकनीकी के बहुत से उपकरण हमें शिष्यता के मार्ग पर चलने में हमारी मदद करने को दिये है । बहुत से ऐसे अद्भभूत साधन LDS.org में पाए जा सकते हैं ।

क्यो हमारे स्वर्गीय पिता हमें इतनी अधिक सहायता देते है ? क्योंकि वह हम से प्रेम करते है । और इसलिये,''जैसे उन्होंने अपने आप से कहा था, यह मेरा कार्य और मेरी महिमा है–जो नाशवरता से होकर और मनुष्य के अनन्त जीवन तक होगी ।''[2]

दूसरे शब्दों में, स्वर्गीय पिता हमारा परमेश्वर,और परमेश्वर हमारा एक प्रतिपालक है ।

हमारे स्वर्गीय पिता अपने बच्चो की जरुरतों को किसी और के जानने से अच्छा जानते है । यह उसका कार्य और महिमा है हमारी मदद हर तरह से करने के लिये,हमें स्थाई और आत्मिक अद्भभूत साधन उस तक वापस लौटने के मार्ग में हमारी सहायता करने को दिये है ।

प्रत्येक पिता एक प्रतिपालक है

संसार के कुछ भागों में,जून के महिने में पिताओ को परिवारों और समाज से आदर मिलता है । यह हमेशा से अपने माता पिता का आदर करना अच्छा होता है । पिता अपने परिवारों के लिये बहुत कुछ अच्छा करते है और उनके पास बहुत से प्रशसानिये विशेषताएं होती है । पितृत्वता की दो अति महत्वपूर्ण भूमिकाएं उनके बच्चों के जीवनों में होती है वे है एक अच्छा उदाहरण और एक प्रतिपालक होना है । पिता अपने बच्चों के कहने से अधिक करते हैं कि क्या सही या गलत है, वे अत्याधिक उन के लिए हाथों से करते है और चाहते है वह स्वयं जीवन को खोजें ।

पिता अपने अमुल्य बच्चों के प्रतिपालक है और अपने अच्छे उदाहरण द्वारा जीवन जीने का एक ईमानदार रास्ता दिखाते है । पिता अपने बच्चों को अकेला नहीं छोड़ते है परन्तु उन के मदद के लिये तत्पर तैयार रहते हैं, जब कभी उनके पैर लड़ख़ड़ते है वे उनकी खड़े होने में सहायता करते हैं । और कभी कभी ज्ञान का सुझाव देते हैं, पिता अपने बच्चों को संर्घष करने देते है, जानते हुए कि यह उनके लिए बेहतरीन सीखने का रास्ता है ।

हम सभी प्रतिपालक है

जबकि संसारिक पिता यह अपने खुद के बच्चों के लिये करते हैं, आत्मा का प्रतिपालक होना कुछ ऐसा है हमें परमेश्वर के सभी बच्चों को, आयु, स्थान, या परिस्थिती के बावजूद देने की आवश्यकता है । स्मरण करें,परमेश्वर के बच्चें हमारे भाई और बहनें है,हम सभी उसी अनन्त परिवार के हैं ।

इस मत में, हम सभी प्रतिपालक बनें—-एक दूसरे की सहायता और पहुंचने के लिये तैयार रहें अपना स्वयं को बेहतर बनाएं । क्योंकि हम परमेश्वर के वंशज है, हमारे पास इतनी योग्यताएं है के हम उसके तरह बनें । प्रिय परमेश्वर और हमारे संगीसाथी,परमेश्वर की आज्ञाओ का पालन कर,और मसीह के उदारहण का अनुसरण सीधे,सकरे,और आनन्द के रास्ते से होकर अपने स्वर्गीय माता पिता की उपस्थित में लौटे ।

यदि विश्व का परमेश्वर हमारी इतनी परवाह करता है कि वह हमारा एक प्रतिपालक है, शायद हम भी, उनके रंग, वर्ग,समाजिकवित्तय परिस्थितियां, भाषा, या धर्म केबावजूद अपने संगीसाथीयों तक पहुंच सकते हैं । चालिये हम प्रेरणाभरे प्रतिपालक बनें और दूसरों के –न सिर्फ अपने बच्चों के परन्तु संसारभर के परमेश्वर के बच्चों के भी जीवनों को आशीषित करें ।

टिपण्णीयां

1. देखें प्रेरितों के काम 13:52; फिलिपिन्स 2:12 ।
2. मूसा 1:39 ।

इस संदेश से शिक्षा

जिन को आप शिक्षा दें उन से आप पूछने की शुरुआत कर उस क्षण को विचारने दे सकते है जब स्वर्गीय पिता उनके प्रतिपालक थे । आप तब पूछ सकते हैं उन सामानताओ के बीच का उस एक पल का जब वे अपना पृथिक पिता द्वारा प्रतिपालक होने का एहसास किया था । आंमत्रित करें उन सामानताओं को लिखने के लिये कैसे उन्होंने प्रतिपालकता की थी । आप उनको चुनौती दे सकते है अनुरकण करने को जो उन्होंने लिखा है दूसरों के प्रयास के लिए एक बेहतर उदाहरण बनने का ।

बच्चे

स्वर्गीय पिता की सहायता

क्योंकि स्वर्गीय पिता हम से प्रेम करते है,उन्होंने हमें बहुत से साधन, या उपहार,हमें सहायता करने को दिएं है । नीचे दिए गए कुछ उपहार उसने हमें दिए है । आप का और दूसरो का जीवन कैसे इन उपहारो के इस्तेमाल से आशीषित हो सकता है ?

पौरोहित्य शक्ति
प्रार्थना
दूसरो के लिये प्रेम
प्रेरित और भविष्यवक्ताओ
धर्मशास्त्र

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 ।
First Presidency Message, June 2016 का अनुवाद । Hindi । 12866 294

मंदिर धर्मविधियो और अनुबन्ध

प्रार्थनापूर्वक इस सामाग्री को पढ़ें और क्या बांटना है को जानने के लिये खोजें । कैसे समझेंगे ''परिवारः संसार को एक घोषणा'' आपका परमेश्वर में विश्वास को बढ़ाएगा उन्हें आशीष देता है जिनका आप भेंट करने वाला शिक्षका के द्वारा ध्यान रखते हैं ?अधिक जानकारी के लिए, reliefsociety.lds.org पर जाएं ।

विश्वास, परिवार, सहायता

सारी धर्मविधियां उद्धार और उर्त्कषता के लिये परमेश्वर के अनुबन्ध के साथ के द्वारा आवश्यक होती है । ''अनुबन्धों को बनाना और पालन करने का मतलब है अपने आप को हमारे स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के साथ बन्धने का चुनाव करना,'' लिन्डा के बॅरटन ने कहा था, सहायता संस्था की जनरल अध्यक्ष । [1]

एलडर नील एल. एंड्रसन बारह प्रेरितो के परिषद के कहा था, ''प्रभु कहता है, धर्मविधियों में ...ईश्वरत्व की सार्म्थय स्पष्ट है ।'

"यहां पर प्रत्येक योग्य मनुष्य के लिये विशेष आशीषें है जिन्होंने बपतिस्मा लिया,पवित्र आत्मा को ग्रहण किया,और नियमिय रुप से प्रभुभोज ग्रहण करते हैं ।''[2]

जब पुरुष और स्त्री मंदिर जाते हैं, एलडर एम. रॉस्ल बॉल्ड बारह प्रेरितों के परिषद से ने कहा, वो दोनों सामान्य सार्म्थय के साथ इंडोव होते है,जोकि पौरोहित्य सार्म्थय होती है...

"... सारे पुरुष और सारी स्त्रीयां उस शक्ति का प्रयोग उनके जीवनों में सहायता करने के लिये करते हैं । वो सारे जिन्होंने प्रभु के साथ पवित्र अनुबंध बनाएं है और जो उन अनुबंधों का आदर करते हैं व्यक्तिगत प्रकटीकरण पाने के योग्य होते हैं,स्वर्गदूतों की सेवाकाई द्वारा आशीषित होते है,परमेश्वर से वार्ता करते,सुसमाचार को पुर्णता से ग्रहण करते,और,अन्त में, यीशु मसीह के साथ-साथ वंशज बन जाते है हमारे पिता के पास यही सब है ।''[3]

अतिरिक्त धर्मशास्त्र

1 नेफी 14:14; सिद्धान्त और अनुबंध 25:13; 97:8; 109:22 ।

जीवित कथाएं

2007 में,पेरु में भयानक भूचाल के चार दिनों के बाद, एलडर मरकस बी. नेश सत्तर के शाखा अध्यक्ष वेनसूलोस कोडी और उन की पत्नी, पेमाला, से मिले थे । ''एलडर नेश ने बहन कोडी से पूछा उनके छोटे बच्चे कैसे है । मुस्कुरहट के साथ, उसने जवाब दिया कि परमेश्वर की अच्छाई के द्वारा वे सब सुरक्षित और अच्छे है । उस ने कोन्डस के घर के बारे में पूछा ।

"" वह चला गया, उसने साधारणता से जवाब दिया ।

" ... ' और तब भी, एलडर नेश ने ध्यान दिया, तुम मुस्कुरा रही हो जैसे हम चल रहें है ।'

"' हाँ, उसने कहा,मैंने प्रार्थना किया और मैं शान्ति में हुं । हमारे पास वो सब है हमें जिस की जरुरत है । हम एकदूसरे के साथ है,हमारे पास हमारे बच्चे है, हम मंदिर में मुहरबंद हुए है, हमारे पास यह अद्भूत गिरजा है, और हमारे पास प्रभु है । हम प्रभु की मदद से फिर दोबारा बन सकते हैं ।

"यह सब किस के बारे में है परमेश्वर के साथ अनुबन्धों को बनाना और पालन करना जोकि हमें कठिनाईयों द्वारा मुस्कुराने की शक्ति, पीड़ा को विजय में परिवर्तित करने देते है ...?''

"परमेश्वर साधन है । हमारी उस शक्ति का बढ़ना उसके साथ हमारे अनुबंध के द्वारा होता है ।''[4]

टिपण्णीयां

1. Linda K. Burton, "The Power, Joy, and Love of Covenant Keeping," *Liahona*, Nov. 2013, 111.
2. Neil L. Andersen, "Power in the Priesthood," *Liahona*, Nov. 2013, 92.
3. M. Russell Ballard, "Men and Women in the Work of the Lord," *Liahona*, Apr. 2014, 48–49.
4. देखें D. Todd Christofferson, "The Power of Covenants," *Liahona*, May 2009, 19, 20–21.

इसे विचारे

मंदिर धर्मविधियां और अनुबंध कैसे हमें सार्म्थय और क्षमता देते है ?

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 ।
Visiting Teaching Message, June 2016 का अनुवाद । Hindi । 12866 294